ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

आंतरराष्ट्रीय भावनाकें लिए शिक्षा

डॉ. धीरज परमार
सहप्राध्यापक , आणंद एज्युकेशन कोलेज, आणंद.

प्रस्तावना :

विश्व एक उपवन है । प्रत्येक मानव ईस उपवनका एक फूल है । विश्वमे करीब सात अबज से ज्यादा लोग रहते है । विश्व की एक व्यवस्था अनुसार कोई भारतीय है तो कोई अमेरिकन , तो कोई रशियन या जर्मन । हमारी रहन सहन, रीतरिवाज, भाषा अलग है लेकिन शारीरिक और मानसिक रुपमें सभी एक है । आज जो सुविद्याए हम भुगत रहे है उनमे सभीका हिस्सा है । विज्ञानके आविष्कारोसें आज हमारा जीवन प्रभावित है । मेडिकल सायन्स में भी कई उपलब्धियां है । कोईभी राष्ट्र अकेला नही रह सकता । परस्पर सहकारसे हमारा जीवन चलता है । प्रकृति सभीके लिए है । समद्रको देखो उसके नाम अलग है लेकिन सभी महासागर एक है उपर अंबरको देखो वो भी एक है । एक ही सूर्यका प्रकाश हम सब पर है । ईस सृष्टि पर सब एक दूसरे के साथ जूडे हुए है ।Everything is connected. Everything is Live. प्रेम, शांति, आनंद, क्षमा सभीको पसंद है । हमारा जन्म प्रेम करने के लिए हुआ है न कि नफरत और धृणा के लिए । हम एक दूसरे को सहायता प्रदान करने के लिए पैदां हए है नही कि एक दूसरे को खत्म करने के लिए. मानव अपने विचारो, कार्यो, व्यवहारोमें स्वयंका न सचे लेकिन सर्वका सोचे तो ये भावना आंतरराष्ट्रीय भावना मानी जाती है । भारतने विश्वको वसुद्यैवकुटुंबकम एवं विश्व एक नीडम मानकर अखिल विश्वको एक परिवार माना है । भारत के शिक्षा कमिशनो, दार्शनिकोने तो

आंतरराष्ट्रीय भावनाको अत्यंत महत्वपूर्ण बताया है । मानव के इतिहास को देखें तो पृथ्वीके पट पर कई सारे युद्ध हो चुके है । दो विश्वयुद्धमे विश्वने संपति और मानव संसाधन का विनाश देखा है । विज्ञान की बजह से विश्व एक गांव बनता जा रहा है । तेजी से चलने वाले वाहन उपलब्ध है । आज मानव के पास सभी भौतिक सुविद्याए होने के बाबजूद शांति नहीं है । विश्व के राष्ट्रो अणुशस्त्रो के पीछे भागे जा रहे है एसी स्थितिमे तीसरे विश्वयुद्धकी संभावनाभी बढती जा रही है । तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो मानवजीवन नष्ट हो जाएगा । युद्ध का मार्ग सर्वनाश का है लेकिन बुद्धका मार्ग सर्वोदयका है तो एसी स्थितिमें आंतराष्ट्रीय भावनाकी शिक्षा आवश्यक है । शिक्षा के द्वारा हम विश्व नागरिक तैयार कर सकते है । शिक्षक और शिक्षा के अर्थपूर्ण प्रयासोसें विद्यार्थीओमें वैचारिक विशालता और गहरी विश्वभावनाओ का विकास कर सकतें है । विद्यालयो, महाविद्यालयोमे साहित्य की शिक्षा, विज्ञान की शिक्षा, सामाजिक विज्ञान की शिक्षा से आंतरराष्ट्रीय भावना का विकास हो सकता है । विद्यालयो, महाविद्यालयोमें कई सारी सहअभ्यास प्रवृत्तिओसे भी आंतरराष्ट्रीय भावना का विकास हो सकता है । आंतरराष्ट्रीय भावनाके लिए शिक्षा उत्तम साधन है । शिक्षा मानव को बदलती है और जब मनुष्य भीतर से बदल जाता है तो कोई प्रश्न नही रहता । हम एकदूसरे के लिए शुभकामनाए प्रगट करेगे तोभी ये भावना द्रढ होती जायेंगी ।

आदिमानव से आधुनिक मानवकी विकासयात्राको देखे तो मानवने बहुत संघर्ष करके कई सारी उपलब्दियां पाई है । विज्ञानसे मानवने अपने जीवनको सुविद्यापूर्ण बनाया है । मेडिकल सायन्समें कई सारी दवाईयांकी शोध की गई है । तेज से चलनेवाले वाहन प्राप्त किये है । कृषिमें भी बहुत बडा परिवर्तन देख सकते है । मानवने यो सभी के साथ अणुशक्तिकी भी शोध करके अपने पेरोमें घाव किया है । मानवने पृथ्वी के सिवाय अन्य ग्रहोका अभ्यास करनेका भी प्रयत्न किया है । अवकाशमें जानेवाले रोकेट और अवकाशयानका निर्माण किया है । ईतनी सारी उपलब्धियांके बाबजूद मानव आज सुखी नहीं है । कुदरत पर विजय हांसिल करनेके लिए प्रयत्नशील मानव अपने आप पर विजय प्राप्त नही कर सका । अनेक उपग्रह अवकाशमें छोडनेवाला मानव अपने पूर्वग्रहको नहीं छोड सकता । मानवको पोषण देनेवाली धरतीका भी बंटवारा हुआ है । नदी के पानीके लिए मानवने कई प्रश्न खडे किये है । ईन भौतिक बटवारेके साथ भावात्मक बटवारेभी किये है जैसे के श्वेत-अश्वेत, साम्यवाद-बिनसाम्यवाद, पूर्व-पश्चिमका भेद । पृथ्वी के पट पर दो भयंकर विश्वयुद्ध हो चुके है । आज भी कई राष्ट्रके बीच तकरार चलती रहती है । ईसा मसीह, गौतम बुद्ध और गांधीने बताये हुए मूल्योकी उपेक्षा हो रही है । विज्ञानकी वजहसे ये विश्व छोटासा गांव हो गया है । लेकिन दिनप्रतिदिन छोटी हो रही दुनियामें रहनेवाला मानवका हृदय विशाल नहीं हुआ है । पंडित नेहरुने बताया था कि हमारे पास दो रास्ते है एक बुद्धका और एक युद्धका रास्ता । दो विश्वयुद्धमें कई राष्ट्रोका अर्थतंत्र तूट गया, लाखो लोगोकी मृत्यु हुई । अभी तीसरे विश्वयुद्धकी संभावनाको हम टाल नहीं सकते । अभी तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो मानवजीवन खत्म हो जायेगा । युद्धमें जीतनेवाला जीतनेका आनंद लेनेके लिये वो जिंदा नहीं होगा ।

युद्ध की शरुआत मानवीके मनमे होती है । जो मानवीके मनको बदल दिया जाय तो ये समस्य टल सकती है । मानवी के मनको बदलनेकी ताकत शिक्षामें है । शिक्षाकी बजहसे मानव कोई राष्ट्रका नागरिक नहीं लेकिन विश्वनागरिक बन जाता है । शिक्षाके द्वारा मानवीको दूसरे स्थलोका ज्ञान दे सकते है । एसी शिक्षासे सहिष्णुता बढेगी और संकुचितता घटेगी । ईतिहास बताता है कि अभी तक जो युद्ध हुए है ये सभी पूर्वग्रह या सहिष्णुता की कमी से हुए है । जाति, राष्ट्र, धर्म, संप्रदाय और परंपराके बेदोसे पूर्वग्रह बढता है । सच्चाई तो ये है कि विश्व एक साझेदारी है । यह एक मैत्रीपूर्ण बह्मांड है । कोई भी राष्ट्र अकेला रह नहीं सकता है । राष्ट्रप्रेमसे आगे हम एक एक विश्वके सदस्य है एसी समजदारीहोनी चाहिए । ये समजदारी बढाने का कार्य शिक्षा का है । सच्ची शिक्षासे मानवीमे आंतरराष्ट्रीय भावना पेदा होगी । आज के बच्चे भविष्यका विश्व है । विश्वके बच्चोमें आंतरराष्ट्रीय भावनाका विकास हो सके ईस लिये 1949में यूनेस्को (UNESCO) संस्थाने आंतराष्ट्रीय भावना का कार्यक्रम शरु किया था । यूनेस्को का विचार है कि विश्वसंस्कृति के विकासके लिए परस्पर विरोध एवं विभिन्नताओके कारणोको समाप्त करना आवश्यक है । भेदोका मूल कारण संस्कृति की विविधता है । यूनेस्को द्वारा अभी विश्वके कई राष्ट्रोमे आंतरराष्ट्रीय भावनाके लिये कार्यक्रम चल रहा है । एक राष्ट्र के बच्चे दूसरे राष्ट्र क बच्चे के बारे मे जाने इस तरह एक आंतरराष्ट्रीय भावनावाला विशाल जनसमूह खडा होगा । शिक्षा के द्वारा विश्व के राष्ट्रोको जोड सकते है ।

महान शिक्षक औक दार्शनिक डॉ. राधाक्रष्णन के मत अनुसार शिक्षा सभी संकुचित वृतियों से पर है । शिक्षा में राष्ट्रीयता की बात न होनी चाहिए । विश्व मे रुसी गणित, नाझी रसायणशास्त्र और यहूदी भौतिकशास्त्र जैसा कुछ नहीं है । वास्तव में संस्कृति आंतरराष्ट्रीय है और विज्ञान सर्वदेशीय है ।

विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा द्वारा व्यक्तियोमें आत्मनिर्भरता और विश्व बन्धुत्व का विकास होना आवश्यक है ।

मानव अपने विचारो, कार्यो, व्यवहारो से जब अपनेपनका त्याग करता है और सर्वमय जगत मानता है तो यही आंतरराष्ट्रीय भावना है ।

आंतरराष्ट्रीय भावना विश्व बन्धुत्व, विश्वमैत्री, विश्वनागरिकता पर आधारित एसी भावना है जिससे हमे केवल अपने तक ही सीमित रहने की प्रेरणा नहीं मिलती बल्कि हम विश्व नागरिकता के सम्बन्ध में विचार करते है । हम कोइ राष्ट्रके नागरिक नहि लेकिन विश्व के नागरिक है और विश्व के कल्याण के सामने निजी कल्याण की परवाह नही करनी चाहिए । भारत के कोठारी कमिशन और मुदालियर कमिशन जैसे शिक्षा कमिशनोने आंतरराष्ट्रीय भावानाओका महत्व अपने रिपोर्ट में बताया है । बसुद्यैवकुटुम्बकम् एवं विश्व एक नीडम का विचार भारत ने विश्व को अर्पण किया है ।

वर्तमान समय आंतरराष्ट्रीय युग है । विघटनकारी वैज्ञानिक अन्वेषणो ने आंतरराष्ट्रीय भावना को मजबूत कर दिया है । विज्ञान के चमत्कारिक आविष्कारोने सभ्यता का स्वरुप ही बदल दिया है । आज कोइ भी व्यक्ति सुख, शांति या संतोष से न रह सके एसे वातावरण का निर्माण हुआ है । एसे वक्त में आंतरराष्ट्य भावना बढाने के लिए शिक्ष एक मात्र साधन है । रेडियो, चलचित्र, दूरदर्शन, समाचारपत्र, महापुरुषो के भाषण आंतरराष्ट्रीय भावना को बढाने का उत्तम साधन है । परन्तु इन सभी में शिक्षा ही सबसे महत्वपूर्ण साधन है ।

- विद्यालय और शिक्षक के प्रयत्नोसे बच्चों मे वैचारिक विशालता और गहरी विश्वभावनाका विकास हो सकता है।
- गुरुदेव टागोरने आंतरराष्ट्रीय भावना के लिए शिक्षा को पसंद किया था और अपनी संस्था को ''विश्वभारती'' जैसा अर्थपूर्ण नाम दीया था। कला, विज्ञान, साहित्य और सौंदर्य देश विदेशकी सीमाओ से पर है।
- कलाकार, वैज्ञानिक या साहित्यकार दिलसे विश्वमित्र होते है। शिक्षक अपनी सूझसे प्रत्येक विषयकी शिक्षा को आंतरराष्ट्रीय भावना का रंग दे सकता है।
- साहित्य की शिक्षा में आंतरराष्ट्रीय भावना के लिये दूसरे विषय की तुलना में बहुत संभावना है। सच्चा साहित्यकार और सच्चा कवि कोइ देश या राज्य का नहीं होता। भगवदगीता के प्रति प्रेम रखने वाले महात्मा डेविड थोरो और साहित्यकार एमर्सन को याद रखना अत्यंत आवश्यक है। महान अकबर का पौत्र दारा और वोरन हेस्टिग्स को भी गीता के प्रति बहुत प्रेम था। कालिदास का शांकुतल पढकर जर्मन कवि गेटे नाचने लगा था। शेक्सपियर के नायको ने सभी राष्ट्रो में चाहना पायी है। गुजरात के नरसिंह महेता का वैष्णवजन आज विश्वभर मे प्रख्यात है। गुजरात के मूर्धन्य कवि उमाशंकर जोशीने विश्व नागरिक के बारे में साहित्य सर्जन किया है। ज्होन रस्किन का Unto This Last पुस्तकने गांधीजी को नया विचार दिया था। गुजरात के उपन्यासकार जोसेफ मेकवान की ''आंगणियात'' का अंग्रेजी अनुवाद "Step child" हुआ है।
- विज्ञान द्वारा मानवजीवन को अनेक सुविद्याए मिली है। जानलेवा बीमारीओ से आज हम मेडिकल सायन्स की वजह से बच सकते है। वैज्ञानिकोने जो दवाईओ की शोध की है वो उसके देश के लिये सीमित नहीं है। शीतलाके लिये डॉ. जेनर की शोध समस्त विश्व के लिये आशीर्वाद रुप है। रेडियम की शोध करनेवाली मेडम क्यूरी ने सिर्फ पोलेन्ड के लिये ये नही किया था। वैज्ञानिक आविष्कार राष्ट्र की सीमा से पर हो। विज्ञान की बजहसे संहार करने वाले शस्त्र तैयर हुए है यह बताता है कि आंतरराष्ट्रीय भावना के बिना अब नहीं चलेगा। विज्ञान द्वारा विनाश होका उसमें कोइभेद नहीं होगा। हमारे सामने दो रास्ते है एक सर्वोदयका और दूसरा सर्वनाश का। विज्ञान की शिक्षा द्वारा ये बाते बच्चो को समजा सकते है।
- भूगोल द्वारा मानव - मानवके बीच में जो साम्य है वो दिखा सकते है। विश्वके सभी नागरिको के प्रश्नोमें समानता दिखाई देती है।
- विद्यालयोको जाति, धर्म, संप्रदाय के प्रभावसे मुक्त करना पडेगा। संकुचित वातावरणको बदलना होगा।
- विश्वके महापुरुषोके जन्मदिन मनाने का आयोजन करना होगा।
- विद्यालयोमें आंतरराष्ट्रीय कक्षा के विशेष दिन जैसे के यु.एन. दिन, मानवअधिकार दिन, पर्यावरण दिन, विश्ववस्ती दिन, विश्व साक्षरता दिन, विश्वमजदूर दिन का आयोजन करना होगा।
- आंतरराष्ट्रीय लोगो को पत्रमित्र बनाकर आंतरराष्ट्रीय भावना का विकास करना होगा।
- कुदरती आपत्ति के वक्त मदद करने के लिए छात्रो को तैयार करना पडेगा।
- अकाल, बाढ, भूकंप, त्सुनामी जैसे आपत्ति में एक दूसरे को मदद करनी पडेगी।
- छात्रो को विश्वघटनाओ का परिचय देना होगा।
- प्रवर्तमान समयमें विश्व में आंतरराष्ट्रीय भावना का विकास अत्यंत आवश्यक है। आंतरराष्ट्रीय भावना के विकास के लिए शिक्षा बहुत असरकारक माध्यम है।

शिक्षा से आदमी में बदलाव आता है। सैनिक सरहद पर सिर काटता है लेकिन शिक्षक वर्ग में छात्रो का सिर बदलता है। सिर काटने की तुलना मे सिर बदलना महत्वपूर्ण है। चलो हम सब मिलकर आंतरराष्ट्रीय भावना बढानेका पवित्र कार्य में जुट जाये और कुछ कर दिखाये।

ग्रंथसूची

1. Sheth N.R. (1994) Values in Search of an indentity, working paper No. 60, Ahmedabad
2. दवे जे.के. (1983) शिक्षा की तात्विक आधारशीला, गुजरात युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद।
3. जोशी के.जे. (1975) शिक्षा और मूल्यविमर्श पी.डी.मालविया कोलेज, राजकोट।
4. दवे जे.के. (2005) विकासमान भारतीय समाज में शिक्षा बी.एस.शाह प्रकाशन, अहमदाबाद।